



UPSMA
UP SUGAR MILLS ASSOCIATION

वार्ता The Dialogue

APRIL, 2025

Monthly Newsletter of UPSMA

VOL: III, ISSUE: 307

NEWSMAKERS

उत्तर प्रदेश: केन हार्वेस्टर ने एक घंटे में 200 क्विंटल गन्ना काटा, कटाई मजदूरों की कमी पर निकला तोड़

लखीमपुर खीरी : कटाई मजदूरों की कमी से गन्ना किसान पेराई के वक़्त अक्सर परेशान रहते हैं। कटाई में देरी से उनको कई बार नुकसान भी उठाना पड़ता है। लेकिन अब केन हार्वेस्टर ने गन्ना किसानों की इसी परेशानी का हल निकाला है। केन हार्वेस्टर एक घंटे में 200 क्विंटल गन्ना की कटाई करते हैं, इससे किसानों को काफी राहत मिलने वाली है। गोला गोकर्णनाथ क्षेत्र में पहली बार शुगर केन हार्वेस्टर मशीन का सफल परीक्षण किया गया। कुम्भी चीनी मिल ने गांव सुहेला, तेजापुर और सिकंदराबाद के खेतों में इस मशीन से गन्ना कटाई का प्रदर्शन किया।



क्षेत्र में गन्ना कटाई श्रमिकों की कमी एक बड़ी समस्या बन गई थी। अधिक मजदूरी के कारण अधिकांश श्रमिक दूसरे राज्यों में चले गए हैं। इसके अलावा, बाघ और तेंदुओं की बढ़ती संख्या के कारण श्रमिक खेतों में जाने से डर रहे थे। इस समस्या के समाधान के लिए कुम्भी चीनी मिल ने 1.20 करोड़ रुपए की शुगर केन हार्वेस्टर मशीन की खरीद की है। यह मशीन स्वचालित रूप से गन्ने को काटती है, छीलती है और सीधे ट्राली में लोड कर देती है। मशीन की क्षमता एक घंटे में 200 क्विंटल गन्ने की कटाई और छिलाई करने की है। इस तकनीकी समाधान से किसानों को गन्ना कटाई और भराई की समस्या से राहत मिलेगी।

Source: Chinimandi, 31st Mar, 2025

गन्ने में खूब लगाया दम, फिर भी चीनी हो रही कम

लखनऊ : प्रदेश में 2017-18 में गन्ना बोआई का क्षेत्रफल 22.99 लाख हेक्टेअर और उत्पादन 1820.75 लाख टन था। पिछले साल 2023-24 में क्षेत्रफल बढ़कर 29.66 लाख हेक्टेअर और उत्पादन 2494.20 लाख टन हो गया। इस दौरान चीनी की पेराई 1111.90 लाख टन से घटकर 981.66 लाख और उत्पादन 120.50 लाख टन से घटकर 104.13 लाख टन रह गया। अब बड़ा सवाल यह है कि जब गन्ने का रकवा, उत्पादन और उत्पादकता बढ़ रहे हैं तो चीनी उत्पादन कम क्यों हो गया? इससे सब परेशान हैं। चीनी मिल मालिक और किसान दोनों ही इसको लेकर हैरान हैं।

पिछले साल से उत्पादन भी घटा:

किसान नेता धर्मेन्द्र मलिक कहते हैं कि उत्पादकता और उत्पादन में तेजी से बढ़ोतरी दो साल पहले तक तो खूब हुई थी। उस समय सबसे ज्यादा उत्पादकता देने वाली

238 वैरायटी किसानों ने खूब बोई। दो साल से उसमें रोग लग गया है, कोई ध्यान देने वाला नहीं है। यही वजह है कि पिछले साल उत्पादन घटा था। इस साल भी कम ही नजर आ रहा है।

रिकवरी कम हुई: चीनी मिल एसोसिएशन के एक पदाधिकारी भी कहते हैं कि गन्ने में रोग होने और रस कम होने के कारण चीनी की रिकवरी कम हो रही है। क्लाइमेट चेंज, कीटनाशक का प्रयोग और जैविक कीटनाशकों के प्रति कम जागरूकता की वजह से ऐसा हो रहा है। जब रिकवरी नहीं होती तो चीनीमिल को भी फायदा नहीं होता। उसका नुकसान किसान और चीनी मिल दोनों को होता है।

एथेनाल में जा रहा गन्ना ? : धर्मेन्द्र मलिक एक बड़ा कारण यह भी मानते हैं कि अब मिल मालिकों को एथेनाल बनाने का लाइसेंस भी मिल गया है। हर तीसरी मिल एथेनाल बना रही है इससे भी चीनी उत्पादन गिरा है।

चीनी मिल से कोल्हू का रुख : चीनी उत्पादन में कमी की वजह ये भी है कि गुड़ का कारोबार बढ़ा है। पिछले चार सालों में गुड़ का कारोबार दोगुना हो गया है। इस साल इसका कारोबार 10,000 करोड़ पहुंचने का अनुमान है। सरकार भी ओडीओपी और अन्य योजनाओं के जरिये इसको बढ़ावा दे रही है बुलंशहर के किसान भरत भूषण त्यागी कहते हैं कि जब उतने ही रेट में या उससे ज्यादा रेट में कोल्हू वाले गन्ना खरीद ले रहे हैं तो फिर चीनी मिल पर क्यों जाएं? चीनी मिल की तरह पर्ची का इंतज़ार नहीं करना। कोल्हू और खांडसारी में हाथो हाथ गन्ना बिक जाता है और नकद भुगतान हो जाता है।

Source: NBT, 3rd April, 2025

पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण 18 फीसदी से अधिक हुआ, गन्ने और अनाज का लगभग बराबर योगदान

चालू इथेनॉल आपूर्ति वर्ष 2024-25 (नवंबर-अक्टूबर) के दौरान 9 मार्च तक पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण 18.08 फीसदी तक पहुंच गया है।

भारत ने अपने इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम में उल्लेखनीय प्रगति की है। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने और हरित ईंधन को बढ़ावा देने के लिए चलाए जा रहे इस कार्यक्रम के तहत पेट्रोल में इथेनॉल ब्लेंडिंग बढ़कर 18 फीसदी से अधिक हो गई है। इसमें सर्वाधिक हिस्सेदारी गन्ने आधारित इथेनॉल की है जबकि लगभग इतना ही योगदान अनाज से बने इथेनॉल का है।

उद्योग सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, चालू इथेनॉल आपूर्ति वर्ष 2024-25 (नवंबर-अक्टूबर) के दौरान 9 मार्च तक पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण 18.08 फीसदी हो गया है। इस अवधि में देश में कुल 302.70 करोड़ लीटर इथेनॉल का उपयोग किया गया। इसमें 151.46 करोड़ लीटर इथेनॉल गन्ना आधारित था जबकि इससे कुछ ही कम 151.24 करोड़ लीटर इथेनॉल अनाज आधारित था।

Continued on the next page ...



UPSMA
UP SUGAR MILLS ASSOCIATION

वार्ता The Dialogue

APRIL, 2025

Monthly Newsletter of UPSMA

VOL: III, ISSUE: 307

इस साल अनाज आधारित इथेनॉल में सबसे ज्यादा 130.26 करोड़ लीटर इथेनॉल की आपूर्ति मक्का से बने इथेनॉल की हुई, जबकि लगभग 21 करोड़ लीटर इथेनॉल खराब अनाज से बनकर आया। गन्ने के जूस से उत्पादित 123.21 करोड़ लीटर इथेनॉल की आपूर्ति हुई। 25.38 करोड़ लीटर इथेनॉल बी-हैवी मोलासेस से बनकर पेट्रोल मिश्रण के लिए सप्लाई हुआ।

पिछले वर्ष 2023-24 के दौरान इथेनॉल मिश्रण का स्तर 15 फीसदी तक पहुंच गया था। इसमें अनाज आधारित इथेनॉल की मात्रा गन्ने से बने इथेनॉल के मुकाबले काफी अधिक थी। क्योंकि पिछले साल सरकार ने गन्ने के जूस से इथेनॉल बनाने पर रोक लगा दी थी। इस साल यह रोक नहीं है, लेकिन गन्ना उत्पादन में गिरावट के चलते अनाज और गन्ने से लगभग बराबर मात्रा में इथेनॉल की आपूर्ति हुई।

केंद्र सरकार ने वर्ष 2025-26 में 20 फीसदी इथेनॉल मिश्रण का लक्ष्य रखा है। इसके लिए सरकार इथेनॉल उत्पादन को कई तरह से बढ़ावा दे रही है। मक्का से इथेनॉल पर काफी जोर दिया जा रहा है। साथ ही इथेनॉल की खरीद और दाम तय करने के लिए एक व्यवस्था बनाई है।

वर्ष 2013-14 में तेल कंपनियों द्वारा कुल इथेनॉल मिश्रण 38 करोड़ लीटर था जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर 707 करोड़ लीटर हो गया। वर्ष 2014 तक पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण का स्तर 1.53 फीसदी था जो 2024 में 15 फीसदी तक पहुंच गया था।

केंद्र सरकार का दावा है कि पिछले दस वर्षों के दौरान इथेनॉल मिश्रण के परिणामस्वरूप लगभग 1.13 लाख करोड़ रुपये से अधिक विदेशी मुद्रा की बचत हुई है और लगभग 193 लाख टन कच्चे तेल की जगह इथेनॉल का उपयोग हुआ है।

Source: Rural Voice, 8th April, 2025

लखनऊ: राष्ट्रीय गन्ना सम्मेलन, २०२५ का भव्य आयोजन एवं गन्ना किसानों को सम्मानित किया गया



लखनऊ: यूपी. शुगर मिल्स एसोसिएशन एवं भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के संयुक्त रूप से आई.आई.एस.आर. सभागार, लखनऊ में दिनांक 11 अप्रैल 2025 को एक दिवसीय राष्ट्रीय गन्ना सम्मेलन, 2025 का भव्य आयोजन किया

गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से श्री प्रणय सिंह, IAS, अतिरिक्त गन्ना आयुक्त, श्री कुमार विनीत, IAS, प्रबंध निदेशक उत्तर प्रदेश सहकारी चीनी मिल संघ लिमिटेड, श्री रसप्पा विश्वनाथन, निदेशक भारतीय गन्ना अनुसंधान, श्री सुशील सोलोमन, भूतपूर्व चांसलर (सी.एस.ए.) एवं एडवाइजर इस्मा, श्री समीर सिन्हा, अध्यक्ष यूपी. शुगर मिल्स एसोसिएशन, श्री रोशन लाल टामक, मुख्य कार्यकारी अधिकारी डी.एस.एम. श्रीराम, उ.प्र. गन्ना विकास विभाग के उच्च अधिकारीगण जिनमें मुख्य रूप से श्री वी.के. शुक्ल, अतिरिक्त गन्ना आयुक्त एवं निदेशक गन्ना शोध संस्थान, शाहजहांपुर, श्री वी. कनौजिया, अतिरिक्त गन्ना आयुक्त, श्री वी.बी. सिंह, अतिरिक्त गन्ना आयुक्त एवं देश के विभिन्न संस्थानों से आए वरिष्ठ वैज्ञानिकगण भी मौजूद थे।

इस सम्मेलन में गन्ना उत्पादन एवं प्रबंधन विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के द्वारा कृषि क्षेत्र में गन्ना विकास में भूमिका पर भी चर्चा की गई। चर्चा के दौरान सहफसली, मशीनरी के कारण एवं वैज्ञानिक विधि से अधिक से अधिक का प्रयोग करके गन्ने का उत्पादन अधिक हो सके और उत्पादन लागत कम की जा सके आदि विषयों पर भी विभिन्न सत्रों में प्रस्तुति एवं चर्चाएं की गईं।

इस अवसर पर राज्य के अन्य जिलों से सम्मिलित कुछ किसानों को भी उनकी उपलब्धियों पर सम्मानित किया गया जिसमें मुख्यतः श्री कौशल मिश्रा, श्री नागेन्द्र सिंह, श्री श्याम बहादुर, श्री मिश्री लाल एवं श्री कल्बे हसन थे, इन सभी सम्मानित किसान भाइयों को मुख्य अतिथि श्री प्रणय सिंह, IAS, अतिरिक्त गन्ना आयुक्त तथा कार्यवाहक गन्ना आयुक्त, उ.प्र. गन्ना विकास विभाग एवं मंच पर मौजूद सभी वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में शाल, स्मृति चिन्ह एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया।

अन्त में कार्यक्रम का सार श्री आर.के. गंगवार, प्रबंध निदेशक मवाना शुगर मिल्स द्वारा एवं धन्यवाद प्रस्ताव श्री दीपक गुप्तारा, महासचिव, यूपी. शुगर मिल्स एसोसिएशन द्वारा रखा गया।

YOGI PITCHES FOR DEVELOPMENT OF NEW SPECIES OF SUGARCANE

Lucknow: Yogi said by flexing the accountability of the management in cooperative sugar mills continuous efforts should be made bring them into profit. The buildings of cooperative sugarcane development committees should be renovated and progressive sugarcane farmers should also be honoured in programmes. He emphasised the repair and strengthening of school already running through sugarcane committees.

He said works done by sugarcane development committees should be inaugurated by public representatives only Yogi said effective arrangements should be made for the prevention of pests and diseases in sugarcane crops adding that the deployment of officers with a clean image should be ensured in the sugar mills operated under the Cooperative Sugar Mills Association and UP State Sugar Corporation.

Source: TOI, 20th March, 2025

P.T.O...



PRODUCTION OF LIGHT BROWN SUGAR (V.V.H.P. SUGAR): LESS CHEMICALS AND MORE NUTRIENTS, SAYS PROF. SEEMA PAROHA

India, the largest consumer and second-largest producer of sugar globally, is making significant strides in the sugar industry, particularly with the production of Light Brown Sugar, also known as VVHP (V.V.H.P.) Sugar. The country's per capita sugar consumption averages around 20 kilograms per year, making it a major global consumer. India's total sugar consumption is expected to exceed 28 million metric tons, cementing its importance in the global sugar market.

Professor Seema Paroha, Director of the National Sugar Institute (NSI) in Kanpur, highlighted the advantages of Light Brown Sugar, noting that it contains more nutrients and is produced with fewer chemicals compared to traditional refined white sugar. "Raw sugar, which is the basis of light brown sugar, naturally retains a layer of molasses, offering valuable nutrients like calcium, iron, magnesium, and potassium—elements often absent in refined sugar," stated Professor Paroha.

In a key development for the Indian sugar industry, the FAD02 Committee recently proposed an amendment to Clause 4.2 of IS 5975:2020, allowing VVHP-grade raw sugar to be approved for direct human consumption. This change aligns with global trends moving towards less processed and more natural food products. The amendment was made official following discussions in the 21st FAD02 Committee meeting held on October 17, 2024.

One of the significant benefits of Light Brown Sugar production is the process's minimal use of chemicals. Unlike refined sugar production, which involves heavy processing and the use of sulfur, the production of Light Brown Sugar is sulfur-free. This process not only makes the sugar more natural but also results in a lower carbon footprint, as it does not require additives or bleaching agents like sulfur dioxide.

However, raw sugar, despite its health and environmental benefits, still faces challenges in market acceptance. In India, most consumers are accustomed to refined white sugar, and there is a need for awareness campaigns to promote the benefits of Light Brown Sugar. Moreover, consumer education about proper storage and shelf life is essential for its widespread adoption.

Professor Paroha emphasized that Light Brown Sugar is becoming a viable option for direct human consumption, offering health benefits over traditional white sugar. With its naturally higher nutritional content, this type of sugar could play a significant role in the future of India's sweetener market.

1. Key Benefits of Light Brown Sugar Production Over White Sugar:
2. Reduction in lime consumption by about 50% compared to white sugar.
3. No use of sulphur in production.
4. Environmentally friendly production process.
5. Better utilization of factory capacity.
6. Improved sugar recovery.
7. Higher nutritional content in sugar.
8. Reduced chemical costs during processing.
9. Lower energy and electricity consumption.
10. Savings in capital and operational expenditures in brown sugar production.

As consumer awareness grows, Light Brown Sugar could potentially become a mainstream choice in Indian households, offering a healthier and more environmentally conscious alternative to refined sugar.

Source: Sugar Times, 31st March, 2025

UTTAR PRADESH: CHHATA SUGAR MILL AND PIPRAICH ETHANOL PROJECTS TO PROVIDE MAJOR BOOST TO FARMERS

Lucknow, Uttar Pradesh: In a major boost for sugarcane farmers, the Uttar Pradesh government has launched an initiative to restart production at the Chhata sugar mill in Mathura district and establish a new ethanol distillery in Gorakhpur's Pipraich area.



According to a government spokesperson, both projects have been initiated by state govt agencies and departments, inviting private participation to operationalise the Mathura unit, which had been shut down since 2009. The upgraded infrastructure will expand the mill's daily crushing capacity from 2,000 tonnes to 4,900 tonnes.

Continued on the next page ...



UPSMA
UP SUGAR MILLS ASSOCIATION

वार्ता The Dialogue

APRIL, 2025

Monthly Newsletter of UPSMA

VOL: III, ISSUE: 307

"This is great news for local farmers. The increased capacity means more sugarcane can be processed, which will directly improve our earnings," said Satyaveer Singh, a farmer from Kosi Kalan village.

In addition, a 120 KPLD ethanol distillery will be set up at the Pipraich sugar mill in Gorakhpur with an investment of Rs 90 crore. Construction will begin once the responsible agency is selected.

The government has also prioritized timely payments to sugarcane farmers. Over the past eight years, a record Rs 2.80 lakh crore has been distributed to farmers, a significant increase compared to Rs 66.70 crore paid between 1995 and 2017 under previous administrations. For the 2025-26 financial year, the government has approved Rs 475 crore for farmer payments.

Chief Minister Yogi Adityanath has consistently highlighted the importance of sugarcane farming to the state's economy. Currently, the sugarcane sector contributes Rs 1.09 lakh crore to Uttar Pradesh's Gross Value Added (GVA), reinforcing its vital role in economic growth and farmer welfare.

Source: Chinimandi, 24th March, 2025

POPULAR ARTIFICIAL SWEETENER SUCRALOSE MAY INCREASE HUNGER: STUDY

A new study has found that sucralose, a widely used artificial sweetener, may actually make people feel hungrier than if they had consumed regular sugar, reported Independent.

Researchers at the University of Southern California discovered that sucralose increased activity in the hypothalamus—the part of the brain that controls appetite and body weight. The findings help explain earlier research that linked artificial sweeteners to weight gain, though the exact reasons had remained unclear until now.

The study, published in Nature Metabolism, involved 75 participants evenly divided by gender and weight. Each participant was tested on three separate occasions, consuming either plain water, a sucralose-sweetened drink, or a sugar-sweetened drink. Researchers monitored changes using brain scans, blood tests, and self-reported hunger levels.

Results showed that sucralose triggered more hunger and greater activity in the brain's appetite-control center—especially in people with obesity. Unlike sugar, sucralose didn't cause an increase in hormones like insulin or GLP-1, which signal fullness to the brain.

Women in the study showed stronger brain responses to sucralose than men, hinting that the sweetener may affect sexes differently.

"The body uses these hormones to tell the brain you've had enough to eat. Sucralose didn't do that," said Kathleen Alanna Page, one of the study's authors. "If your body expects calories because of the sweetness but doesn't get them, it could change the way your brain responds to food over time."

The research also found that sucralose strengthened connections between the hypothalamus and parts of the brain involved in motivation, decision-making, and sensory processing—areas that influence cravings and eating behavior.

While the study shows that sucralose can affect hunger and brain activity, researchers say more work is needed to understand whether these effects have lasting impacts on body weight or eating habits. They recommend further research in larger and more diverse groups.

Source: Chinimandi, 5th April, 2025

Knowledge Box

चीनी उद्योग की प्रगति में रेलवे की भूमिका भी सराहनीय रही क्योंकि उस काल में सड़क यातायात ग्रामीण क्षेत्र में विकसित नहीं हुआ था। इस उद्योग में रेलवे की भूमिका एक अनूठा उदाहरण है गोरखपुर जिले में सरैया चीनी मिल का; सरदार नगर से हेतिमपुर, कुशीनगर तक 30 किलो मीटर लंबी रेलवे लाइन बिछाई गई जिस पर चार स्टेशन बनाए गए थे। इन स्टेशनों के पास गन्ना क्रय केंद्र थे। भाप से चलने वाला एक इंजन, जिसका नाम सम्राट अशोक रखा गया था, 100 डिब्बों की रेलगाड़ी को खींच कर मिल के अंदर लाता था।



UPSMA Newsletter titled 'Varta' the Dialogue is providing information on sugar, sugar industry and sugar byproducts. We request you to share your thoughts and experience with us through write-ups, success stories, updates, photographs etc. We publish your creative in the next edition of this newsletter. You are requested to send your entries to be published in UPSMA newsletter through mail at upsma@upsma.org. The newsletter will be uploaded on UPSMA website.

अस्वीकरण: यहाँ दी गई जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटा या अन्य स्रोतों से ली गई है, जिन्हें विश्वसनीय माना जाता है और इस पर इस तरह भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। इस समाचार में दी गई जानकारी में किसी भी अनजाने त्रुटि से किसी भी व्यक्ति को होने वाले किसी भी नुकसान या क्षति के लिए 'वार्ता टीम' किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं होगी। इस दस्तावेज़ में दी गई जानकारी इस समाचार की तारीख तक है और इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि भविष्य के परिणाम या घटनाएँ इस जानकारी के अनुरूप होंगी।